बुद्धिमत्ता के जीन्स की तलाश

बुद्धि में अनुवांशिकता और परवरिश के योगदान की बहस में वैज्ञानिक धीरे-धीरे इस राय पर सहमत होते नज़र आते हैं कि बुद्धि पर इन दोनों का मिला-जुला असर होता है।

यह बहस बरसों से नहीं, सदियों से जारी है कि बुद्धिमत्ता कितनी विरासत में मिलती है और कितनी पालन-पोषण से। वैज्ञानिक भाषा में इसी सवाल को इस तरह पूछा जा सकता है कि क्या बुद्धि वंशानुगत गुण है।

बुद्धि में अनुवांशिकता और परवरिश के योगदान की यह बहस सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि समय-समय पर न सिर्फ किसी व्यक्ति को बल्कि पूरे के पूरे समुदाय को बेवकूफ घोषित कर दिया जाता है। अलबत्ता वैज्ञानिक धीरे-धीरे इस राय पर सहमत होते नज़र आते हैं कि बुद्धि पर इन दोनों का मिला-जुला असर होता है।

मानव जीनोम ृंखला पता लगने के बाद जब इस बात की होड़ मची है कि हर चीज़ का जीन खोज निकाला जाए, तो अकल का जीन कैसे पीछे छूटता?

हाल ही में लंदन के इंस्टीट्यूट ऑफ सायकिएट्री के रॉबर्ट प्लोमिन के नेतृत्व में इसी बात को लेकर खोजबीन की गई। शोध का मकसद उन जीन्स को पहचानना था जो व्यक्ति को बुद्धिमान बनाते हैं।

इसके लिए 7000 सात-वर्षीय बच्चों को लिया गया और उनके विभिन्न बुद्धि परीक्षण किए गए। साथ ही उनके खून के नमूने भी ले लिए गए। इसके बाद परीक्षणों के परिणामों के आधार पर बच्चों को बुद्धि के क्रम में जमाया गया। सर्वाधिक अंक पाने वाले और सबसे कम अंक पाने वाले बच्चों के डी.एन.ए. में अंतरों का हिसाब लगाया गया। इससे शोधकर्ताओं को यह देखने में मदद मिली कि उच्च प्राप्तांक और निम्न प्राप्तांक वाले बच्चों के डी.एन.ए. में कहां-कहां अंतर हैं और क्या इन अंतरों में कोई पैटर्न है। इस तुलना के परिणामों को देखकर हम आश्चर्य में पड़ भी सकते हैं या नहीं भी पड़ सकते। सब कुछ हमारी पूर्व मान्यताओं पर निर्भर है।

उपरोक्त तुलना से पहली बात तो यह पता चली कि बुद्धि के विकास में यदि जीन्स का योगदान है, तो ऐसे सैकड़ों जीन्स हैं।

दूसरी बात यह पता चली कि बुद्धि इनमें से प्रत्येक जीन का योगदान इतना कम होता है कि शायद पता भी न चले।

शोधकर्ताओं ने ऐसे 6 जीन्स पहचाने जो उच्च या निम्न बुद्धिमत्ता से बहुत निकटता से जुड़े लगते हैं। इनमें से सबसे सशक्त जीन्स का भी बुद्धि पर इतना असर होता है कि वह 0.4 प्रतिशत का अंतर पैदा कर सकता है। सारे 6 जीन्स मिलकर अधिकतम 1 प्रतिशत का असर पैदा कर सकते हैं।

वैज्ञानिकों को इन नतीजों पर ज़्यादा आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि वे जानते हैं कि बुद्धि जैसा पेचीदा गुणधर्म एक-दो जीन्स पर निर्भर नहीं हो सकता। दरअसल हमारा पूरा जीनोम ही इस बात को निर्धारित करता है कि मस्तिष्क का विकास कैसे होगा।

कुल मिलाकर निष्कर्ष यही है कि बुद्धि का एक जीन खोजने की कोशिशों को झटका लगा है। परवरिश, परिवेश वगैरह के महत्व को कम करके आंकना गलत होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***